'खिलौना' नाटक का सफलतापूर्वक मंचन

स्त्री-अध्ययन विभाग, म. गां. अं हिंदी विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के अंतर्गत सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया। जिसके अंतर्गत 'खिलौना' नाटक का सफलतापूर्वक मंचन किया गया। यह नाटक पाकिस्तानी लेखिका नाज़िमा हुसैन की उर्दू में लिखित कहानी(हिंदी अनुवादक -सुरजीत) का नाट्य रूपान्तरण है। नाट्य रूपान्तरण प्रदर्शनकारी कला (फिल्म एवं रंगमंच) विभाग के शोधार्थी आशीष कुमार द्वारा किया गया। मुख्य भूमिका राकेश विश्वकर्मा, ओमप्रकाश ओम तथा नितप्रिया प्रलय ने अदा किया। इस नाटक का निर्देशन भी नितप्रिया प्रलय ने किया, वे कहती हैं कि

"यह नाट्य प्रस्तुति पितृसत्तात्मक व्यवस्था में स्त्री को 'यौन शुचिता का प्रतीक' समझे जाने का विरोध करती है। नाज़िमा जी ने अपनी मूल कहानी में स्त्री/ पुरुष के चरित्र की विभिन्न कोणों से पड़ताल की है जिससे यह स्पष्ट होता है कि पुरुष के लिए स्त्री का चरित्र हमेशा से संदिग्ध रहा है। अमाया द्वारा इसी पुरुषवादी मानसिकता को उजागर करने की कोशिश नाटक के मूल में सन्निहित है, जो 'विमेन स्पेस' से जुड़े कई सवाल दर्शकों के मन में जागृत करती हैं और यह संदेश देती है कि

भारतीय समाज व्यवस्था में दोहरा चरित्र इख्तियार किए हुए पुरुषों की एक बड़ी जमात है जिस पर

गंभीरता पूर्वक विचार किए जाने की जरूरत है।"

नाट्य प्रस्तुति के तुरंत बाद नाट्य आलोचना से संबंधित सत्र का आयोजन किया गया जिसमें टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोसल साइंसेस, मुंबई की वरिष्ठ प्रो. इलिना सेन, विश्वविद्यालय के कुलसचिव

डॉ. राजेंद्र मिश्र, अतिथि लेखक बुद्धिनाथ मिश्र, जनसंचार विभाग के अध्यक्ष डॉ. कृपाशंकर चौबे, स्त्री अध्ययन विभाग की अध्यक्ष डॉ. सुप्रिया पाठक तथा डॉ. अवंतिका शुक्ला ने इस नाट्य प्रस्तुति के बारे में अपनी राय से दर्शकों को अवगत कराया। प्रस्तुति के दौरान बड़ी तादाद में दर्शक मौजूद थे।